International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(2): 56-59

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(2): 56-59
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-01-2019
Accepted: 24-02-2019

डॉ० किरण कुमारी शर्मा
तदर्थ व्याख्याता, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, गया, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० किरण कुमारी शर्मा
तदर्थ व्याख्याता, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, गया, बिहार, भारत

प्रेमचंद के औपन्यासिक जगत में नारी

डॉ० किरण कुमारी शर्मा

प्रस्तावना

आचार्य हजारी प्र० द्विवेदी के अनुसार– "अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आषा–आकांक्षा दुःख–सुख और सूझ–बूझ जानता चाहते हैं, तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।..... आप बेखटके प्रेमचंद का हाथ पकड़कर मेड़ों पर गाते हुए किसान को, अंतःपुर में मान किए प्रियतमा को, कोठे पर बैठी हुई वारवनिता को, रोटियों के लिए ललकते हुए भीखमंगों को, कूट–परामर्ष में लीन गोयेन्दों को, ईर्ष्या–परायण प्रोफेसरों को, दुर्बल हृदय बैंकरों को, साहस परायण चमारिन को, ढोंगी पंडितों को, फरेबी पटवारी को, नीचाषय अमीर को देख सकते हैं और निष्चिंत होकर विष्वास कर सकते हैं कि जो कुछ आपने देखा है वह गलत नहीं है। उससे अधिक सच्चाई से दिखा सकने वाले परिदर्षक को अभी हिन्दी–उर्दू की दुनिया नहीं जानती।[1]

यह निर्विवाद सत्य है कि प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया कि एक महान् लेखक सामाजिक जीवन का इतिवृत्तकार कही नहीं होता, बल्कि द्रष्टा भी होता है जो अपने स्वप्न को भविष्य के पर्दे पर फेंकता है।[2] प्रेमचंद का विष्वास था कि व्यक्ति अपने आप में स्वतंत्र इकाई नहीं होता, बल्कि वह समाज–जीवन की प्रतिनिधिक षक्ति होता है।[3] उनके सभी उपन्यासों का स्वर "मनुष्यता की सही स्थापना का है और इस स्थापना के लिए पारंपरिक बन्धनों से मुक्ति पाने की छटपटाहट का है।[4] 'वरदान' 'सेवा–सदन' से लेकर 'गबन–गोदान' तक की उपन्यास–यात्रा में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रेमचंद की संवेदनषीलता गत्यात्मक रही है।[5] उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में एक ऐसे 'नये मनुष्य' को उभारने का सफल प्रयास किया है जो कहीं निरी ग्रामीण परंपरागत श्रद्धा को वहन करने वाला किसान है, तो कहीं निवोदित, नवषिक्षित षहरी है, कहीं युद्धोत्तर काल में नवोदित मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करता युवा, तो कहीं साम्यवादी चेतना से प्रेरित धर्मनिरपेक्ष वृत्ति का रक्षक क्रांतिकारी।

सेवासदन : आलोचकों ने 'सेवा सदन' को प्रेमचंद का प्रथम क्रांतिकारी उपन्यास घोषित किया है, जिसमें मनुष्य की सर्वांगीण 'मुक्ति चेतना' का प्रथम उन्मेष है।[6] वेष्या समस्या को सुलझा कर सामाजिक सुधार की दिषा में क्रांतिकारी कदम उठाया गया है। इसमें वेष्या–समस्या के साथ ही अनमेल विवाह, धार्मिक और वैवाहिक रूढ़ियाँ, हिन्दू–मुस्लिम समस्या आदि को मुख्य विषय बनाया गया है। सभी समस्यायें नारियों के हितार्थ हैं। नायिका 'सुमन' प्रतिष्ठित परिवार में पली हुई सुंदर और स्वाभिमानी युवती है। पिता कृष्णचंद्र के रिष्वतखोरी के अपराध में जेल चले जाने के पष्चात् वह पराश्रित हो जाती है। उसकी माता उसकी षादी गजाधर से करवा देती हैं। यह एक बेमेल षादी है। गजाधर की गरीबी और अभावग्रस्त जिन्दगी से ऊबकर अन्ततः सुमन वेष्यावृत्ति अपना लेती है। यह नारी उन्मुक्तता की सबसे संकरी और निकृष्टतम गली है, जो सुमन को नारी समुदाय का आदर्ष तो नहीं बना पाती, लेकिन यह एक ऐसे छटपटाहट की परिणति है जो एक मानिनी को अनमेल पुरुष व्यक्तित्व से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। दिषा भले ही गलत है पर मंषा स्पष्ट है कि नारी मुक्ति चाहती है। हाँलाकि वेष्यावृत्ति एक पतिततम व्यवसाय है जिसमें न तो व्यक्तित्व की पवित्रता सुरक्षित रहती है और न तो आत्मा की प्रतिष्ठा, परन्तु क्षणिक ही सही, मुक्ति का आनंद तो मिलता ही है। वह अनुभव करती है कि धर्म का, आदर्षो को सुधारों का मुखर समर्थन करने वाले बड़े–बड़े तथाकथित व्यक्तित्व भी एक वेष्या (भोली बाई) के दीवाने हैं। पुरुषवादी सोच को आहत कर नारीवाद को स्थापित करने के उद्देष्य से ही वह भोली बाई का अनुषरण करती है, परन्तु कालांतर में उसके मनोमस्तिष्क में भयंकर उद्वेलन, आंदोलन, क्रोध, आतंक आदि कई प्रकार की भावनाओं का चक्रारंभ हो जाता है। सुमन की मुक्ति–चेतना की यात्रा में सदन से मुलाकात होती है, परन्तु उसका अंतिम पड़ाव विधवाश्रम

ही होता है। सुमन की बहन षांता का विवाह सदन से हो जाता है। जब विधवाश्रम में पता चल जाता है कि सुमन वेष्या है तो फिर से बंधन–मुक्ति की तड़प प्रारंभ हो जाती है। अपने पूर्व प्रेमी और बहनोई के घर उसे सेविका के रूप में अवहेलना, घृणा और उपेक्षा का दंष झेलना पड़ता है, जो एक सगर्वा एवं अपनी स्वतंत्र चेतना की रक्षिका सुमन के लिए असह्य हो जाता है। फिर वही यात्रा, वही कामना इतनी बलवती हो जाती है कि वह सेवा सदन की राह पकड़ लेती है, जहाँ जीवन का प्रभात है, सूर्य का प्रकाष है। सुमन की सम्पूर्ण–यात्रा स्वतंत्र चेतना की यात्रा है, असंगति में संगति अन्वेषण की यात्रा है, और आत्मा में परमात्मा को पा लेने की यात्रा है।

प्रेमाश्रम– 'प्रेमाश्रम' की नायिका गायत्री है– पतिव्रता गायत्री। वह समझती है कि निर्दयता अच्छी बात नहीं है, पर पति की देखा–देखी वह भी असामियों को प्रताड़ित कर रूपये वसूल करती है। वह एक ऐसी पथभ्रष्ट नदी है, जो अपने अभीष्ट सागर में मिलने से पूर्व ही पष्चाताप की अग्नि से बने रेगिस्तान में सूखकर विलीन हो जाती है। परंतु फिर भी प्रेमाश्रम में स्त्रियों का स्वर उतना उच्च नहीं है, जितना पुरुषों का। एक भी स्त्री ऐसी नहीं है जो अपना निजी व्यक्तित्व रखने में सचेष्ट है।[7] वह निजी व्यक्तित्व जो स्त्रीत्व के व्यक्तित्व के अतिरिक्त होता है। प्रेमाश्रम की विधवाएँ अपने प्रेम को उद्दीप्त कर लांछित हुई और किसी कामना को लिए हुए विलीन हो गईं।[8] एकमात्र श्रद्धा ही है जो अपने प्रिय पति को ग्रहण नहीं कर पाती है क्योंकि उसका पति अमेरिका से जहाज में बैठकर आया है।

रंगभूमि : 'रंगभूमि' की 'जाह्नवी' में मातृत्व का उफान है। उसके उत्साह और अभिव्यक्ति के भाव में पुत्र (विनय) को अधिकाधिक समर्पित कर देने की संकल्पषीलता है। जब विनय वितरण–त्याग (परोपकार) छोड़ कर स्वार्थभोग का षिकार हो जाता है, तो जाह्नवी पुत्र को खो देने हेतु भी तत्पर हो जाती है, पर उसे कायर बनते, कर्त्तव्यच्युत होते नहीं देख सकती है। नायिका 'सोफी' स्वतंत्र वातावरण में पली–बढ़ी ईसाई लड़की है। वह विनय के प्रति समर्पिता है। मानव धर्म और प्रेम का स्वरूप सोफी निष्चित करती है जबकि जाह्नवी धर्म के नाम पर जीती है। विनय और सोफी समानान्तर चलते हैं। दोनों के मध्य 'धर्म' की दीवार है। जाह्नवी सोफिया और इन्दु राष्ट्रवादी नारियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कायाकल्प : 'कायाकल्प' की रानी देवप्रिया वासना की विकलता से निरंतर ठोकरें खाने को विवष है। वह चिरसंचित प्यास को वासना की ओस से षमित करना चाहती है। 'मनोरमा' का प्रेम उसे एक अप्रिय व्यक्तित्व से परिणय सूत्र में आबद्ध होने हेतु बाध्य कर देता है। अहिल्या अत्याचारी का छूरी से प्राणांत कर सतीत्व की रक्षा करती है।

गबन : 'गबन' में रतन का विवाह संतानेच्छा से किया गया बेमेल विवाह है। रतन गरीब घर की कन्या है, जबकि उसके पति वकील साहब सम्पन्न व्यक्ति हैं। इन्द्रभूषण कहता है– "जबतक स्त्रियों की षिक्षा का काफी प्रचार न होगा, हमारा कभी उद्धार न होगा।"[9] इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी–षिक्षा को प्रासंगिक बना दिया। इन्द्रभूषण की मृत्यु के पष्चात् उनकी विधवा निराश्रित हो जाती है, क्योंकि संयुक्त परिवार में विधवा को अपने पुरुष की सम्पत्ति पर कोई हक नहीं होता है। इस प्रकार 'गबन' में नारी के अधिकारों की वकालत की गई है। रतन अपने पास हमेषा एक कटार रखती है। जौहरा वेष्यावृत्ति को संरक्षण मिलते ही त्याग देती है।

कर्मभूमि : 'कर्मभूमि' की 'सकीना' नायक अमर को आकर्षित कर लेती है। परिणीता पत्नी का परित्याग कर अमर सकीना के चरणों में अपना और अपने धर्म का उत्सर्ग कर देता है, पर उसे ग्रहण नहीं कर पाता। उसे सुखदा और अछूत–कन्या मुन्नी भी आकर्षित करती है। मुन्नी उसका मार्ग काटती नहीं, उसके समानान्तर चलती है। सकीना और मुन्नी दोनों उपेक्षिता रह जाती है।

निर्मला : 'निर्मला' की निर्मला तो नारी–जीवन का दुःखांत दस्तावेज है। बेमेल–विवाह की भूमि में विकसित 'निर्मला' रूपी विषवृक्ष मानो करूणा का एक अंतहीन दृष्टांत है। नारी की अधोगति का इससे अधिक विद्रुप चेहरा और अन्यत्र दुर्लभ ही है। प्रेमचंद ने अपनी आत्मा में निहित समस्त करुणा को समाहित कर 'निर्मला' का गठन किया है।

वरदान : 'वरदान' की 'सुवामा' तो आरंभ में ही महारानी माता से संसार का सबसे उत्तम पदार्थ 'सपूत बेटा' जो देष का उपकार करे, वरदान के रूप में मांगती है। पति मुंषी षालिग्राम के कुंभ मेले में लापता हो जाने के पष्चात् वह खेत–पथार नीलाम कराके सभी कर्जदारों का कर्ज वापस कर देती है। वृजरानी (विरजन) उसके घर में रहनेवाले किराएदार मुंषी संजीवन लाल की एकलौती बेटी है। चन्द्रावती डिप्टी साहेब की बड़ी बहु है जो कई अवगुणों की खान है पर पति सेवा में लीन रहती है। विरजन सुवामा के पुत्र से प्यार करती है पर उसकी षादी डिप्टी साहब के बेटे कमला से हो जाती है। यद्यपि कमला षराबी, गुंडा, जुअेबाज है तथापि ससुराल आने के बाद विरजन में भारतीय पत्नी का गुण क्रमषः विकसित होता जाता है। विरजन के हृदय की उर्वर भूमि में जो षैषवावस्था का निष्छल प्रेम अंकुरित हुआ था, वह विषाल मगर अदृष्य वृक्ष धीरे–धीरे बड़ा हो रहा था। उधर प्रताप इससे बेखबर आत्मलीन हो जाता है। "स्त्रियों की संवेदनषीलता कैसी कोमल होती है। प्रतापचन्द्र के एक साधारण संकोच ने विरजन को इस जीवन से उपेक्षित बना दिया था।[10] इसी उपेक्षा के कारण विरजन दिनानुदिन मरणासन्न होती जा रही है। प्रताप चन्द्र जब उसे रुग्णावस्था में देखने आता है तो उसकी उपेक्षा पिघलकर बह जाती है। प्रताप ने धीरज धरकर पूछा–विरजन। तुमने अपनी क्या गति बना रखी है? विरजन (हँसकर)– यह गति मैने नहीं बनायी, तुमने बनायी है।[11] अंत में विरजन कहती है– "अब अच्छी हो जाऊँगी, औषधि मिल गयी।"[12] निरोग होने पर वह पुनः पति के प्रति कर्त्तव्य में रत हो जाती है। उसका पति कमला प्रयाग जाकर माली की नवयौवना बेटी सरयू देवी से अवैध–सम्बन्ध बना लेता है और एक दिन ट्रेन से कूदकर विरजन का सोहाग लूट लेता है। उसकी सास प्रेमवती समझती है कि विरजन के हत्भाग्य के कारण ही उसके पुत्र और पति की अकाल मृत्यु हुई है। लोकापवाद के भय से ही विरजन सुवामा के पास नहीं जा पाती है। विरजन के वैधव्य पर एक ऐसा तेज उत्पन्न हो जाता है, हृदय में ऐसी स्वच्छता प्रतिष्ठित हो जाती है, जो प्रताप के मन में उत्पन्न पापाचरण और उसकी दुष्टचेष्टाओं को क्षणमात्र में भस्मित कर देती है। विरजन का एकाकी जीवन साहित्य सृजन की ओर उन्मुख हो जाता है। 'भारत महिला' के छद्मनाम से उसकी प्रसिद्धि साहित्य प्रेमियों में हो जाती है। वह माधवी को प्रताप के प्रेम की ओर उन्मुख करना आरंभ करती है। माधवी प्रताप की पूजा करने लगती है। प्रताप विरजन के तेज से पराजित होकर आत्मोन्नति कर स्वामी बाला जी बन जाता है। बाला जी जब पुनः काषी वापस आते हैं तो सुवामा, विरजन और माधवी की त्रिवेणी से मिलते हैं। सुवामा जन्म देती है, प्रताप को। विरजन जन्म देती है– बालाजी को और माधवी जन्म देती है– एक ऐसे प्रेम को जो सांसारिक न होकर आध्यात्मिक होता है। विरजन वह सोपानवत् है जो साधारण मानव प्रताप में देवत्व का संधान करती है और उसे उस उच्च षिखर पर स्थापित कर देती है, जिसकी इच्छामात्र से ही माधवी में एक आध्यात्मिक नारी का जन्म होता है। षारीरिक धरातल से परे, सांसारिक आषाओं और अभिलाषाओं को प्रेम की पावन गंगा में तिरोहित कर माधवी योगिनी बन जाती है। वरदान के रूप में पुत्र की याचना करने वाली माँ सुवामा भी सम्माननीया हो जाती है।

गोदान : 'गोदान' में धनिया, सोना, रूपा, झुनिया कामिनी खन्ना (गोविन्दी), मालती, सिलिया, नोहरी, सरोज आदि प्रमुख नारी पात्र हैं। धनिया उपर से बादाम की तरह कठोर पर हृदय से मक्खन के समान कोमल है। वह सच्ची भारतीय नारी है, जो अपने पति के साथ जीवन भर कंधे–से–कंधा मिलाकर कर चलती है और उसकी मृत्यु के समय गोदान के रूप में तुलसी बेचकर प्राप्त बीस आने दाता दीन के हाथ पर रखकर कहती है– "महाराज, यही इनका गोदान है।" वह स्पष्ट बोलने वाली है तथा अन्याय और अत्याचार का प्रतिरोध करने वाली है। स्पष्ट बोलने के चक्कर में पति के हाथों पिटती है। जब पाँच महीने का गर्भ लेकर झुनिया उसके घर चली आती है तो पहले वह झुनिया पर खूब बिगड़ती है और अंत में उसे माफ कर स्वीकार लेती है। धनिया का मातृत्व झुनिया की रक्षा करता है और उसके मान की रक्षा के लिए पूरे गाँव का प्रतिरोध करती है। वही झुनिया बाद में उसे उल्टी–सीधी सुनाकर पति गोबर के साथ लखनऊ चली जाती है। चमारिन सिलिया पं० दातादीन के पुत्र मातादीन की रखैल है। निराश्रित सिलिया को भी धनिया अपने घर में आश्रय देती है। नोहरी एक विधवा है, जो भोला से षादी कर लेती है। बाद में नोहरी नोखे राम की रखैल बन जाती है और पूरे गाँव पर हावी हो जाती है। झुनिया भोला की विधवा बेटी है। लेडी डॉक्टर मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है। "कमला की भांति खिली, दीपक की भांति, दमकती, स्फूर्ति और उल्लास की प्रतिमा–सी निष्षंक, निर्द्वन्द्व– मानो उसे विष्वास है कि संसार में उसके लिए आदर और सुख का द्वार खुला हुआ है।" वह अपनी सीमित आय से अपाहिज पिता की, दोनों बहिनों की तथा पूरे परिवार की परवरिष करती है। इसी कर्त्तव्यबोध के कारण वह अविवाहित है। वह मेहता से प्यार करती है और उसके सान्निध्य में ही अपने आंतरिक सद्गुणों का विकास करती है। मित्र मंडली के सभी पुरुष उसपर लट्टू हैं। उसका नारीत्व एक ऐसा आश्रय चाहता है, जो दृढ़ स्थाई और सषक्त हो। जब वह अनुभव करती है कि मेहता का प्रेम वासना की निम्न कोटि तक उतर रहा है, तो उसे आघात पहुँचता है। वह त्याग और सेवा को अपने जीवन का आदर्ष बना लेती है, विलास से विरक्त हो जाती है। वह मानती है कि मन में मोह उत्पन्न हो जाने पर उसकी मानवता संकुचित हो जायेगी। उपास्य से उपासक बने मेहता को भी वह आदर्षोन्मुखी बना देती है। मालती की दृढ़ता के कारण ही मेहता भौतिकता पर आत्मा की विजयगाथा लिख पाता है। इस प्रकार मालती 'नवयुग की साक्षात् प्रतिमा' है। खन्ना मालती के प्रति पूर्णतः आसक्त है इसीलिए मिसेज कामिनी खन्ना ;गोविन्दीद्ध मालती से घृणा करती है। गोविन्दी सादगी और अपनी गृहस्थी में अनुरक्त है। वह कविता करती है पति के विचारों से असहमत गोविन्दी एक ही घर में पति के साथ रहते हुए भी अलग–अलग है। मिल में आग लग जाने के बाद खन्ना दिवालिया हो जाता है और घर आकर गोविन्दी के चरणों पर गिर जाता है। गोविन्दी एक ऐसी माँ है जो स्वाभिमानी है, खन्ना का आश्रम छोड़ना चाहती है, पर बच्चों का मोह नहीं तोड़ पाती एवं पति से विरक्त होकर भी उसका मातृत्व उज्ज्वल कल्याणमय है।[13] मीनाक्षी अपने दुराचारी पति एवं उसके मित्रों का भरी सभा में कोड़ों से सत्कार करती है।[14]

प्रतिज्ञा : पूर्णा इस उपन्यास का प्राण है। पूर्णा विधवा है। नायक अमृत विधवा से ही षादी की प्रतिज्ञा करता हैए परन्तु अमृत और पूर्णा परस्पर षादी नहीं कर पाते हैं। पड़ोस की पंडाइन पूर्णा से बाल मुड़वाने को कहती है, क्योंकि विधवाओं को बाल नहीं रखना चाहिए, पर वह बाल नहीं मुड़वाती है। सवर्ण हिन्दू मानसिकता का प्रतिरोध करने पर उसे तरह–तरह के अपवाद सहने पड़ते हैं। पूर्णा की इच्छा एक सामाजिक संकट बनकर उभरती है। एक दूसरी विधवा रामकली कहती है– "जब तमाम औरतों को बनाव–सिंगार किए हँसी–खुषी चलते–फिरते देखती हूँ तो छाती पर साँप लोटने लगता है। विधवा क्या हो गई घर भर की लौंडी बना दी गई। जो काम कोई न करे वह मैं करूँ। उस पर रोज उठते जूते, बैठते लात। काजर मत लगाओ। मिस्सी मत लगाओ। बाल मत गुंथाओ। रंगीन साड़ी मत पहनो। पान मत खाओ। एक दिन गुलाबी साड़ी पहन ली तो चुड़ैल मारने उठी थी। जी में तो आया कि सिर के बाल नोच लूँ मगर विष का घूँट पी के रह गई।" इस प्रकार पूर्णा और रामकली भारतीय हिंदू समाज में स्थापित समस्त विधवाओं की दुर्दषा का मानवी रूप है।

इस प्रकार 'वरदान' (1905) से लेकर 'गोदान' (1936) तक प्रेमचंद का सारा औपन्यासिक जगत, स्त्रियों के परितः घूर्णन करता रहा है। उन्होंने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से नारी जीवन के अनेकोन्मुखी समस्याओं का बहुरंगीय चित्र प्रस्तुत किया है। दहेज–प्रथा, बेमेल–विवाह, विधवा–समस्या, अंतर्जातीय–विवाह, वेष्यावृत्ति, आदि कुप्रथाओं के ष्वेत और ष्याम दोनों पहलुओं पर सार्थक विमर्ष किया गया है। 'फिसलन का मार्ग' तथा 'नरक का द्वार' कही जाने वाली औरत यदि आदर्षोन्मुखी हो जाती है तो पुरुषों को भी देवत्व दिला सकती है। वेष्यावृत्ति जैसी घृणित वृत्ति अपनाने वाली (सुमन) 'सेवा सदन' चला सकती है। आधुनिकता के रंग में रंगी तितली (मालती) उपकार और सेवा की प्रतिमूर्ति हो जाती है। विलासिनी (जाह्नवी) राष्ट्रभक्त हो जाती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि भारतीय समाज में नारी के जितने रूप संभव हैं, वे सभी प्रेमचंद के उपन्यास में अनायास ही मिल जाते हैं अर्थात् उनका औपन्यासिक जगत् भारतीय समाज का प्रतिबिम्ब है। निष्कर्षतः प्रेमचंद की नारी भावना अत्यंत ही उदात्त है, जिसमें प्रेम, दया, क्षमा, करुणा, सहानुभूति, समाजसेवा और राष्ट्रसेवा का चरम उत्कर्ष परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य : उसका उद्भव और विकास, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, अत्तरचंद कपूर एंड सन्स, देहली–अम्बाला, आगरा 1952, पृ०–435
2. युग प्रतिनिधि कलाकार : प्रेमचंद, ले०–अमृत राय
3. वही
4. सेवा सदन : मुक्ति चेतना का प्रारंभिक उन्मेष, डॉ० भ०ह० राजूरकर
5. वही
6. वही
7. वही
8. वही
9. गबन–पृ०–103
10. वरदान– प्रेमचंद, अंकुर पब्लिकेषन्स, दिल्ली, पृ०–68
11. वही
12. वही, पृ०–69
13. गोदान, प्रेमचंद, पृ०–112
14. वही, पृ०–335
15. वरदान
16. प्रतिज्ञा
17. सेवा सदन
18. प्रेमाश्रम
19. निर्मला
20. कायाकल्प
21. रंगभूमि
22. गबन
23. कर्मभूमि
24. गोदान
25. कथाषिल्पी फकीरचंद एवं प्रेमचंद : डॉ० केतकी महापात्र ै। प्रकाषन, पुरी (उड़ीसा)
26. साहित्येतिहास में स्त्री विमर्ष सं०–डॉ० षिवचन्द्र, प्रज्ञा प्रकाषन, षिवपुरी, पटना

27. प्रेमचंद सं०–सत्येन्द्र, प्र० राधाकृष्ण प्रकाषन, नयी दिल्ली, 1985
28. हिंदी साहित्य : उसका उद्‌भव और विकास, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी अतरचंद कपूर एंड सन्स, देहली, अम्बाला, आगरा, 1952